

तुमने बताया जगत को प्रत्येक कण स्वाधीन है।
कर्ता न धर्ता कोई है अणु-अणु स्वयं में लीन है॥२३॥
हे पाणिपात्री वीर जिन! जग को बताया आपने।
जग-जाल में अबतक फँसाया पुण्य एवं पाप ने॥
पुण्य एवं पाप से है पार मग सुख-शान्ति का।
यह धर्म का है मरम यह विस्फोट आतम क्रान्ति का॥२४॥

(सोरठा)

पुण्य-पाप से पार, निज आतम का धर्म है।

महिमा अपरम्पार, परम अहिंसा है यही॥

विशेष :- इस जिनेन्द्र-वन्दना में चौबीस परिग्रहों से रहित चौबीस तीर्थकरों की वन्दना की गई है। एक-एक तीर्थकर की स्तुति में क्रमशः एक-एक परिग्रह के अभाव को घटित किया गया है।

दर्शन-पाठ

दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनम्॥१॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां साधूनां वन्दनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं छिद्रहस्ते यथोदकम्॥२॥
वीतराग-मुखं दृष्ट्वा पद्मराग-समप्रभम्।
जन्म-जन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति॥३॥
दर्शनं जिनसूर्यस्य संसारध्वान्तनाशनम्।
बोधनं चित्त-पद्मस्य समस्तार्थ-प्रकाशनम्॥४॥
दर्शनं जिन-चन्द्रस्य सद्धर्माभूत-वर्षणम्।
जन्म-दाहविनाशाय वर्धनं सुख-वारिधेः॥५॥

जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणाश्रयाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय देवाधिदेवाय नमो जिनाय॥६॥

चिदानन्दैक-रूपाय जिनाय परमात्मने।
परमात्म-प्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः॥७॥